ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | JULY - 2021

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

हिंदीकथासाहित्य में चित्रित वृद्ध त्रासदी
(राजेंद्र श्रीवास्तव लिखित तिरस्कार कहानी के विशेष संदर्भ में)

डॉ. राजेंद्र कैलास वडजे
हिंदी विभाग अध्यक्ष,
ए.आर. बुर्ला महिला महाविद्यालय, सोलापुर.

*** लेखक परिचयः-**

जन्मः १९/१०/१९६५, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

शिक्षा: बी.एससी., बी(अंग्रेज़ी साहित्य) .ए., एम(हिन्दी) .ए., पीएच(हिन्दी) .डी.

प्रकाशित कृतियाँ :'अभी वे जानवर नहीं बने', 'कोई तकलीफ़ नहीं', 'दुःखाच सावज' (कहानी(संग्रह-; 'सुबह के इन्तज़ार में' (नाटक(; 'काग़ज़ की ज़मीन पर' (सम्पादक(; 'हिन्दी कहानी व और विकासउद्भ :', 'हिन्दी उपन्यास व और विकासउद्भ :' (आलोचना। विश्वविद्यालयों के लिए कुल दो पुस्तकों का लेखन।(

सम्मान व पुरस्कार: महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा सम्मानित, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादेमी का 'मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार', 'विष्णुदास भावे पुरस्कार', 'शब्दनिष्ठा सम्मान-', 'आशीर्वाद पुरस्कार', 'कलमकार पुरस्कार', 'आन्तरभारती साहित्य पुरस्कार', 'हिन्दीश्री सम्मान', राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा 'हिन्दीसेवी सम्मान-' आदि। 'सारिका' द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर रचना पुरस्कृत।

आकाशवाणी द्वारा नाटकों और कहानियों का नियमित प्रसारण। दूरदर्शन और टीचैनलों पर भाषा व साहित्य .वी. विषयक साक्षात्कार। विभिन्न नाटकों का प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा मंचन। विभिन्न राज्यों के पाठ्यक्रमों मे रचनाओं का समावेश। रचनाओं का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद। विश्वविद्यालयों के बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़ के सदस्य के रूप में नामांकित।

सम्प्रति: राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यपालक।

तिरस्कार कहानी में चित्रित वृद्ध त्रासदीः-

राजेंद्र श्रीवास्तव लिखित कहानी 'तिरस्कार' वर्तमान समय की पारिवारिक समस्याओं में से एक वृद्ध समस्या को केंद्र में रखकर लिखी गयी है । इस कहानी की मुख्य नायिका सावित्री बुआ है, पति की मृत्यु के बाद उनका एकमात्र सहारा उनका लड़का राकेश ही था । उन्हें हमेशा ऐसा लगता था कि उनका बेटा राकेश उन्हें अपने साथ शहर ले जाएगा, बुढ़ापे का सहारा

बनेगा। इसी इंतजार में वह कई दिनों तक अपने गांव में ही रहती थी। सामनेवालों को उबा देने की सीमा तक बातूनी बुआ-सारा गाँव उन्हें बुआ कहकर ही पुकारता था।

सावित्री बुआ अपने गाँव से अकेली ही नागपुर पहुँचती है, उसे रेल्वे स्टेशन पर कोई भी लेने नहीं आता। तैतीस घंटे की रेल यात्रा के बाद वह नागपुर स्टेशन पहुँचती है। किंतु पोते को देखने के उल्लास के कारण वह अपनी पूरी थकान भूल गयी थी। राकेश ने बिना बताए ही शहर की लड़की मिताली से विवाह कर लिया था। सावित्री बुआ ने अब तक बहु का चेहरा भी नहीं देखा था। किंतु आज वह पोते और बहु दोनों को एक-साथ देखने वाली है। नाम के समान ही बहु भी सुंदर ही होगी और पोता भी बहु पर ही गया होगा, इन्हीं खयालों में वह कार्ड पर छपे पते पर पहुँच जाती है।

अपने गाँव में जब सावित्री बुआ को पोस्ट कार्ड मिलता है उसपर केवल लिखा होता है कि, 'शादी कर ली है, लड़की ऑफिस में ही काम करती है। महाराष्ट्रीयन। मिताली। मिताली भांडारकर।' पोते के जन्म की ख़बर मिलते ही बुआ की खुशी का कोई ठिकाणा नहीं था। बहुत दिनों तक संभालकर रखी हुई सोने की करधन को बेचकर वह पूरे गाँव में मोतीचूर के लड्डू बांटती है।

अपना झोला और लोहे का भारी संदुक सँभालते हुए, पत्रिका पर अंग्रेजी में छपा पता पूछते-पूछते, बड़ी मिश्कील से शाम ढ़लने के बाद, वे सिविल लाईंस के बंगले पर पहुँची। बँगले की रौनक देखकर सावित्री बुआ की आँखें फट-सी गई। पूरा बँगला रौशन था, बाहरी गेट पर दरबान खड़ा था। बड़ी-बड़ी गाडियों से मेहमान आ रहे थे, दरबान उन्हें बड़ी अदब के साथ वह झुककर सलाम करता और दरवाजा खोलता। बाहर बगिचे में रंग-बिरंगे फूल, पेड़-पौधे, मखमली घास, पानी के फव्वारे, चारों और लाल-नीली रौशनी। पत्रिका दरबान को दिखाकर सावित्री बुआ अंदर जाने का प्रयास करता है। दरबान कई प्रश्न पूछता है जिससे तंग आकर बुआ वापस अपने गाँव जाना चाहती है किंतु वह अपने बेटे से मिले बिना नहीं जाना चाती थी। दरबान को तसल्ली होने के बाद उसने अंदर किसी से फोन पर बात की और कहां कि यहा रुकिए आपको लेने के लिए आदमी भेज रहे है। एक नौकर आता है और सावित्री बुआ को पीछले दरवाजे से घर के भीतर ले जाता है।

भीतर के हॉल में बुआ को राकेश दिखाई दिया, अपने बेटे को वह तुरंत पहचान गई। मोबाईल फोन पर किसी पर गुस्सा हो रहा था, उसकी बगल में खड़ी लड़की को देखकर बुआ समझ गई कि यही मिताली है, राकेश की पत्नी। उनमें विडियोग्राफर को लेकर बहस हो रही थी जो अबतक आया नहीं था। मिताली की नजर सावित्री बुआ पर पड़ती है और सांस को देखते ही वह कुछ गुस्से में आ जाती है। वह पूछती है कि यह कौन है? भीतर कैसे आयी। राकेश ने बताया कि यह मेरी माँ है। मिताली कहती है कि इन्हें हॉल में आने की आवश्यकता क्या थी। राकेश भी मिताली की भाषा में माँ को डाँटते हुए कहता है कि, माँ तुम्हें हॉअल में आने की क्या आवश्यकता थी, अरे ! तुम्हें तो गाँव से भी यहां आने की आवश्यकता नहीं थी, और यदि आना ही था तो फंक्शन के बाद आना था। बेटे के मुंह से ऐसे शब्द सुनकर माँ को बहुत दुःख हुआ। बुआ कहती है कि बच्चे को देखने। यह सुनकर मिताली गुस्से से कहती है कि तुम बच्चे को छूना तो दूर, उसके पास भी जाओगी तो उसको इंफेक्शन हो जाएगा। कोई व्यक्ति आकर कहता है कि चीफ कमिश्नर साहब आ गये है। 'तुम अब हटों यहाँ से माँ' कहते हुए राकेश लगभग धक्का देते हुए वहा से चला जाता है। मिताली भी पीछे नहीं है, वह कहती है कि, 'दो कदम तो चला नहीं सकती और बच्चे को देखने आ गयी, अब जब तक मेहमान लोग बाहर लॉन में न चले जाएँ, तब-तक यहाँ से बाहर मत निकलना।' इसके बाद मिताली ने पर्दे खींच लिए।

हॉल में लोगों के हँसने-बोलने की आवाजें आने लगी। काफी समय तक बुआ अंदर ही खड़ी रही, उसे बैठने के लिए भी जगह नहीं थी। अचानक दो घटनाएँ एक-साथ घटीत हुई। एक तो बुआ के हाथ से संदुक नीचे गिरा और दूसरे अकबकाकर

बुआ ने पर्दे खींच दिए। हॉल में मौजूद सारे लोग बुआ की ओर देख रहे थे। सभी के हाथ में गिलास थे और सभी कुछ पी रहे थे। उनमें से एक ने पूछा कि, 'हू इज दैट लेडी...' उस व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कुराहट थी जैसे वह कोई मनोरंजक दृश्य देख रहा हो। इतने में मिताली कुछ कहती है तभी राकेश कहता है, 'दरअसल ये अभी-अभी यहाँ यहाँ आयी है, ये मेरी माँ.... माँ जैसी है... जस्ट लाईक माई मदर... । यह सब सुनकर सावित्री मो झटका लगता है कि अपना ही बेटा आज मुझे माँ कहने से शर्म महसूस कर रहा है। उन्हें बहुत गुस्सा आ रहा था। वह अपने बेटे को तिरस्कार भरी नज़रों से देखती हुई बोली कि, हम इसकी माँ नहीं है, सुन लीजिए सब लोग...।' माँ वहाँ से चली गयी। उनकी आवाज में एक विचित्र किस्म का तिरस्कार था।

सारांश रूप से 'तिरस्कार' कहानी में लेखक राजेंद्र श्रीवास्तव ने वर्तमान समय के मध्यमवर्गीय समाज की त्रासदी को चित्रित किया है। आज हमारा आर्थिक विकास हो रहा है किंतु हम हमारे माता-पिता को भूल रहे है। अपने ही बच्चे जब अपने माता-पिता के साथ ऐसा व्यवहार करते है तो बुढापे में उन्होंने कहाँ जाना चाहिए? वर्तमान समय में वृद्धाश्रम की संख्या जितनी तीव्रता से बढ़ रही है वह एक भयावह स्थिति है। माँ-बाप अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करने में अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को तिलांजली देते है। वहीं बच्चे बुढ़े माँ-बाप की लाठी बनकर उनकी जिम्मेदारी नहीं लेते बल्कि उन्हें दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देते है। आज हम कई जगहों पर ऐसे बुढे लोगों को देख सकते है जो अपनी समस्याओं से संघर्ष कर रहे है जिन्हें अपनों ने ही सताया है। हम युवा पीढी को अपने माता-पिता का सहारा बनकर समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहिए।